शिक्षण संस्थान के मुख्य घटक

मुख्य आठ प्रकार के घटक है।

- नियोजन
- संगठन
- प्रशासन
- निर्देशन
- समन्वय
- नियन्त्रण
- मुल्यांकन
- पृष्ठ पोषण

समन्वय का अर्थ →

प्रबन्धन में समन्वय का तत्पर्य है कि शिक्षण संस्थान की विभिन्न क्रियाओं में सामंजस्य स्थापित करना। प्रबन्धन की प्रक्रिया में विभिन्न व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों एवं क्रियाओं मे समन्वय लाना अति आवश्यक है क्योकि समन्वय द्वारा कार्य की प्रभावशीलता बढती है और शिक्षण के लक्ष्यो की प्राप्ति

आसानी या सुगमता से होती है। प्रधानाचार्य या प्रधानाध्यापक को सामाजिक आर्थिक भौतिक शक्तियों का उपयोग करके शिक्षण संस्थान की विभिन्न क्रियाओं को एक ही दिशा की ओर उन्मुख करना होता है।

अतः समन्वय की क्रिया शिक्षण संस्थान की कार्यशीलता के लिए प्रशासन के नियोजन व्यवस्था, प्रशासन, पर्यवेक्षण तथा नियन्त्रण आदि पक्षों में भी समन्वय होना आवश्यक है अतः प्रबन्धन में समन्वय का अर्थ शिक्षा की विभिन्न क्रियाओं, सम्बन्धों एवं प्रयत्नों के मध्य उचित तालमेल बैठाना मिलजुल कर कार्य करना तथा इन सभी को एक सूत्र में बाँधना ही समन्वय है। प्रबन्धन में समन्वय को और अधिक स्पष्ट करने के लिए निम्न परिभाषाएँ है।

परिभाषाएँ

मूने तथा रेले के अनुसार →

"समन्वय किसी सामान्य उद्देश्य की पूर्ति हेतु क्रियाओं में एकता लाने के सामूहिक प्रयत्नों का व्यवस्थापूर्ण प्रकाश है"

कुण्ट्ज और ओ डोनेल के अनुसार

"समन्वय प्रशासन का एक प्रकार्य मात्र ही नहीं अपितु वह तो प्रशासन का सार है"

एफ० ई० एल० ब्रोच →

"समन्वय का अर्थ विभिन्न सदस्यों में कार्यों को ठीक प्रकार विभाजित करना एवं यह निश्चित करना कि प्रत्येक सदस्य इन कार्यों को सद्भावपूर्वक कार्य कर रहे संगठन में संतुलन व एकता है"

शिक्षा में समन्वय

समन्वय का क्षेत्र बहुत अधिक व्यापक एवं विस्तृत है। शिक्षा प्रक्रिया के प्रत्येक क्षेत्र- नियोजन संगठन प्रशासन पर्यवेक्षण निरिक्षण, प्रबन्धन, नियन्त्रण आदि सभी पक्षों मे समन्वय महत्वपूर्ण है। शिक्षण संस्थान प्रबन्धन में समन्वय को अध्ययन की दृष्टि से निम्नांकित क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है-

1- पाठ्य क्रम / शैक्षिक क्रियाओं मे समन्वय

2- पाठ्य सहगामी क्रियाओं मे समन्वय

3- प्रशासनिक क्रियाओं में समन्वय

Page No.:
Date: / /

(1) पाठ्यक्रम/शैक्षिक क्रियाओं मे समन्वय →

इसके अन्तर्गत शैक्षिक क्रियाओं से सम्बन्धित शिक्षण और परिक्षण इत्यादि को सम्मित किया जाता है।
इसके लिए शिक्षण संस्थान के प्रधानाचार्य को शिक्षकों एवं छात्रों की पारस्परिक क्रियाओं मे समन्वय करना होता है।
इसमें शिक्षण के साथ परीक्षण की क्रिया भी महत्वपूर्ण होती है तभी क्रियाओं को पूरा माना जाता है। और इसमे प्रमुख शिक्षण संस्थान को समय तालिका बनाने की होती है शिक्षण मे समय तालिका इस प्रकार बनाई जाती है जिससे शिक्षकों को आपस में कठिनाई या समस्या ना हो।